P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* (Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

संत कवि एवं संगीतकार स्वामी प्रेमानंद का कृतित्व

राजेश गोपालराव केलकर
अध्यक्ष,
कंठ्य संगीत विभाग,
फैकल्टी आफ परफ़ार्मिंग आर्ट्स,
महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बरोड़ा,
बडोदरा, गुजरात, भारत

सारांश

गुजरात राज्य में संत परम्परा का अपना वैशिष्ट्य, इतिहास और परंपरा है। पुष्टिमार्ग के प्रणेता वल्लभाचार्य जी के सम्प्रदाय का अच्छा खासा प्रचार प्रसार हुआ। तत्पश्चात उन्ही की संगीत परमपरा से प्रेरित होकर सगुण उपासना के अन्य पुरस्कर्ता स्वामीनारायण सम्प्रदाय के स्वामी सहजानंद एवं उनके परमहंस संतों का भी भक्ति संगीत और भक्ति आन्दोलन में प्रमुख योगदान रहा है। अध्यात्म, साहित्य, कला एवं संगीत को माध्यम बनाकर सामाजिक उत्थान करने के लक्ष्य से विविध सम्प्रदायों ने बहुत बड़ा योगदान दिया। गुजरात और आसपास के प्रान्तों में और अब तो सारे विश्व भर में फैले स्वामीनारायण सम्प्रदाय के संतों का कार्य अद्वितीय रहा है। स्वामी प्रेमानंद 'प्रेमसखी' एक ऐसे ही महान संत कवि एवं संगीतकार रहे। प्रस्तुत लेखन में उन्ही के साहित्य एवं संगीत में किये कार्य का परिचय एवं संक्षिप्त विश्लेषण है।

मुख्य शब्द : संत, स्वामी प्रेमानंद, संगीत, स्वामीनारायण सम्प्रदाय।

प्रस्तावना

सगुण मार्गी स्वामीनारायण सम्प्रदाय (उद्धव सम्प्रदाय) की स्थापना स्वामी सहजानंद (भगवान् स्वामीनारायण १७८१–१८३०) ने की। जिन्हें अपने गुरु श्री सम्प्रदाय के रामानंद स्वामी से विशिष्टाद्वैत दर्शन की दीक्षा दी गयी थी। भगवान् स्वामीनारायण के नेतृत्व में सम्प्रदाय का काफी प्रचार हुआ। विशेषकर गुजरात प्रांत में समाज को आपने नया चैतन्य, अध्यात्म एवं दिशा दी। आप के गोलोकवासी होने तक लाखों लोगों ने सम्प्रदाय अंगीकार किया और उसके अनुयायी बन गए थे। जिन्हें आज भी 'सत्संगी' कहा जाता है। अनुयायियों में अन्यान्य वर्गों के लोग थे जिन्हें योग्य शिक्षा–दीक्षा देकर व्यसनों एवं गलत रुढ़ियों से मुक्त किया। स्वामी सहजानंद (भगवान स्वामीनारायण) के द्वारा निर्मित साहित्य में संस्कृत में लिखित 'शिक्षापत्री', गुजराती में गद्यरूप 'वचनामृत' एवं तीसरी कृति 'वेदरहस्य' प्रमुख है। समाज के हर स्तर पर अध्यात्म का सन्देश देने एवं सामाजिक तथा सांस्कृतिक उत्थान हेतु भगवान स्वामीनारायण के द्वारा ३००० से अधिक संतों को दीक्षा दी गयी। उनमें से ५०० संत 'नन्द संत' या 'परमहंस' कहलाये। आप के परमहंस शिष्यों में स्वामी ब्रह्मानंद, स्वामी प्रेमानंद, स्वामी मुक्तानंद, स्वामी शुकानंद, एवं स्वामी गुणातीतानंद प्रमुख थे। कहते है की इन्हें १०८ प्रकार की कठोर तपस्या एवं परीक्षाओं से गुजरना पडा था। इन में से अधिकतर संत स्वयं या तो राजा, विद्वान पंडित, राजा महाराजाओं के सलाहकार, योद्धा, संगीतकार एवं उत्तम कवि भी थे। यह परम्परा आज भी चल रही है, कि संतों को अनेक परीक्षाओं के बाद ही 'संत' बनने का अवसर मिलता है। स्वामीनारायण सम्प्रदाय के संतो द्वारा सम्प्रदाय की साहित्य संपदा में भक्ति, अध्यात्म, कला सांस्कृतिक और अनेकानेक ज्ञानधाराएं जुड़ गयी। इसमें संगीत कला भी जुड़ी और एक विशेष संगीत परम्परा का भी निर्माण हुआ। जिसकी प्रेरणा पुष्टिमार्गीय हवेली संगीत और आधार पूर्णतः भारतीय शास्त्रीय संगीत रहा है। इन संत परम्परा के परमहंस संतों में से एक स्वामी प्रेमानंद के बारे में यह विश्लेषणात्मक लेखन प्रस्तुत है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं के इतिहास में सर्व समावेशक धर्म, अध्यात्म एवं कलाओं का स्थान अनन्य साधारण है। कला द्वारा समाज को अध्यात्म और धर्म की तरफ मोड़ा जा सकता है इस बात का ज्ञान और ध्यान हमारे ऋषि–मुनियों, संतों को हमेशा रहा। वेदों में 'सामवेद' जैसे प्रमुख ग्रंथों में जहाँ सर्वप्रथम बार 'संगीत' को इतना बड़ा स्थान देकर सम्मान दिया गया, वहीँ आधुनिक इतिहास की प्रमुख परम्पराओं, धर्म सम्प्रदायों में संगीत को उच्च स्थान दिया गया। गुरमत संगीत, वैष्णव पुष्टिमार्गीय संगीत की तरह गुजरात में मुख्यतः जिसका विकास हुआ ऐसे 'स्वामीनारायण' सम्प्रदाय में भी अनेक संत कवियों ने इस कला की सेवा की। इनमें स्वामी प्रेमानंद एक प्रमुख व्यक्तित्व था। विभिन्न शैली,

साहित्य, भाषा में रचे गए विशाल कार्य को संक्षेप में रखना इस लेखन का उद्देश्य है।

स्वामी प्रेमानंद का बाल्यकाल

स्वामी प्रेमानंद (१७८४–१८५४) भगवान स्वामीनारायण के प्रमुख कृपापात्र संतों में अग्रणी थे। आप का जन्म साठोदरा नागर ब्राह्मण परिवार में हुआ था। एक मतानुसार भरूच के पास 'दोरा' गाँव में और अन्य मतानुसार नडियाद में आप का जन्म हुआ। आप का 'हठीराम' नाम रखा गया। परन्तु कहते हैं, कि बचपन ही में उनके माता पिता ने समाज द्वारा किये गए गलत दोषारोपण के कारण बेहद दुखी होते हुए उन्हें त्याग दिया। बालक हठीराम को एक मुस्लिम परिवार ने गोद लिया, 'डोसाताई' नामक सज्जन ने उन्हें बड़ा किया। कुछ वर्षो के पश्चात ११ वर्षीय बालक हठीराम अपने पालक पिता के साथ जेतपुर नामक गाँव गए। जहां पर गुरु स्वामी रामानंद द्वारा अपने शिष्य स्वामी सहजानंद को उत्तराधिकारी नियुक्त करने के अवसर पर बहुत बड़े अध्यात्मिक समारोह में गए। तब स्वामी सहजानंद के व्यक्तित्व से आकर्षित हो कर उन्ही के साथ रहने का निश्चय हठीराम ने किया और स्वामी जी के साथ आश्रम में रहने लगे।

स्वामी प्रेमानंद की अध्यात्मिक, साहित्यिक एवं सांगीतिक यात्राः भगवान् स्वामीनारायण ने बालक हठीराम को उसकी इच्छानुसार अपने पास ही रख लिया। सर्वदर्शी भगवान स्वामीनारायण ने हठीराम के पूर्व जन्म के संस्कार को पहचानते हुए उन्हें उज्जैन नगरी में क्षिप्रा नदी के किनारे जा कर संगीत शिक्षा प्राप्त कर वापस आने का आदेश दिया। उज्जैन में योग्य संगीत गुरुओं के मार्गदर्शन में कड़ी मेहनत और कष्ट कर के संगीत में गायन और वादन की शिक्षा एवं प्रावीण्य बहुत कम समय में पाया। बाद में अपने गुरु भगवान स्वामीनारायण के पास गढ्डा गाँव में वापस आये। सन १८१४ में उन्हें दीक्षा दी गयी और उनका नाम रखा 'स्वामी निजबोधानंद'। अध्ययन काल में आपने संस्कृत भाषा की भी पढ़ाई की और उसमें प्रभुत्व प्राप्त किया।

भगवान स्वामीनारायण ने एक दिन उन्हें कुछ कीर्तन रचने के लिए आदेश दिया। तुरंत गुरु का आदेश पालन करते हुए आप ने कुछ सुन्दर कीर्तन रचनाएं रची जिसमें अपने ही गुरु की मूर्ती का सुन्दर वर्णन था। गुरु भगवान स्वामीनारायण बेहद प्रभावित हुए, और इसप्रकार गीत–संगीत रचनाकार के रूप में अपनी यात्रा शुरू हुई। परन्तु काव्य रचनाओं में 'निजबोधानंद' के स्थान पर 'प्रेमानंद' अधिक उपयुक्त, गेय, सहज गम्य तथा काव्यमय लगने के कारण भगवान स्वामीनारायण ने उनका पुनः नामकरण किया और अब आप 'स्वामी प्रेमानंद' कहलाये गए। स्वामी प्रेमानंद ने किसी एक रचना में भगवान कृष्ण की सखि, एक गोपी 'चन्द्रसखी' का सुन्दर उल्लेख किया जिसमें 'प्रेमलक्षणा' भक्ति (असीम भक्ति एवं प्रेम) का अनुपम वर्णन था। इससे प्रभावित हो कर भगवान ने उन्हें 'प्रेमसखी' से संबोधन किया। तब से आप 'प्रेमसखी' के नाम से भी प्रसिद्ध हुए।

चातुर्मास के दौरान अषाढ़ी एकादशी के दिन आप ने अपने गुरु के सामने एक कठिन प्रण किया। जिसमें प्रतिदिन गुरु की के मूर्ती के वर्णनयुक्त आठ पदों की रचना करने का संकल्प किया। इससे भगवान प्रसन्न हुए और दिन प्रतिदिन गुरु शिष्य का स्नेह अधिकाधिक बढ़ता गया। और शायद इसी प्रसंग की प्रेरणा रही होगी की स्वामी प्रेमानंद की अध्यात्म–साहित्य–संगीत रसधारा अविरत बहने लगी।

संगीत सम्बन्धी कुछ प्रसंग

जूनागढ़ संस्थान के नवाब ने स्वामी प्रेमानंद का संगीत जब सुना तब बड़े प्रभावित हुए। एक बार नवाब के पास ग्वालियर के कुछ प्रतिष्ठित ध्रुपद गायक आये। पर नवाब ने उन्हें यह कहकर सुनने से इनकार किया की स्वामी प्रेमानंद का संगीत सुनने के बाद किसी प्रकार का संगीत सुनने की इच्छा नहीं होती। अतः ग्वालियर के यह संगीतकार स्वामीनारायण भगवान के पास पहुंचे और स्वामी प्रेमानंद के गायन को सुनने की इच्छा व्यक्त की। भगवान के आदेश पर स्वामी प्रेमानंद ने दोपहर के समय गायन प्रारंभ किया। परन्तु सब के आश्चर्य के बीच प्रातःकालीन 'भैरवी' राग गाना शुरू किया तो ग्वालियर के संगीतकार अचंभित हुए। परन्तु स्वामी प्रेमानंद ने अपने दिव्य गायन से ऐसा समां बाँधा की मानो प्रातःकाल हुई हो। ग्वालियर के प्रतिष्ठित संगीतकार स्तब्ध रह गए।

एक अन्य प्रसंग में स्वामी प्रेमदास अपने गुरु के चिंतन में मग्न हो कर अपनी सारंगी के साथ गुरु स्तुति के पद गाते गाते लीन हो गए। मधुर सुरावालियों को सुनते ही स्वयं भगवान स्वामीनारायण कडाके की ठण्ड में बाहर आये और उनके गायन सुनते ही अपने आप को मानो भूल गए। पूरी रात बीत गयी फिर भी एक ही स्थान पर खड़े रहकर अपने प्रिय शिष्य का मधुर गायन बड़ी तन्मयता से सुना और बहुत आशीर्वाद दिए।

कवि एवं संगीतज्ञ स्वामी प्रेमानंद

स्वामी प्रेमानंद एक उत्तम कवि एवं संगीतकार थे। गायक–वादक होने के अलावा उत्तम वाग्गेयकार थी। 'हरिवाचानामृत सागर' ग्रन्थ के अनुसार आप उत्तम वादक थे और सारंगी आदि वाद्य बजाने में प्रवीण थे। उनका काव्यभण्डार विशाल रहा है। उनमें 'चेष्टापद' का विशेष स्थान है, 'चेष्टापद' में स्वामीनारायण के नित्य नियम, क्रिया कलापों का वर्णन होता है। भगवान स्वामीनारायण के अध्यात्मिक सौन्दर्य एवं मूर्ती के वर्णन से युक्त 'वंदु पद' की रचना 'ध्यान–समाधि' हेतु की गयी। इन पदों को आज भी विश्वभर के अनेकों स्वामीनारायण मंदिरों में गाया जाता है। भगवान स्वामीनारायण को पुरुषोत्तम का अवतार मानकर सभी रचनाओं की निर्मिती की है। आप की रचनाओं में 'प्रेमसखी' मुद्रा का उपयोग किया है। आप एक शीघ्रकवि थे और अन्यान्य अवसर पर उस्फूर्त काव्यों की रचना आपने की। आपने अपनी रचनाएं भक्ति रस से पूर्ण, अत्यंत आर्तता के साथ गुरु के प्रति प्रेम एवं अनुराग के कारण रची उन्हें गाया और वह अमर हो गयी। गुरु की मूर्ती का अत्यंत सूक्ष्म निरक्षण कर के प्रत्येक रचना के साहित्य में निरंतर मिठास और नाविन्य का अनुभव कराया। अपने गुरु की प्रत्येक कृति, क्रिया कलापों, वाणी–व्यवहार को शब्दों में अंकित कर के मूर्त स्वरुप दिया और अपने काव्य द्वारा अमर बनाया। यह उनके गुरु के प्रति श्रद्धा और अनुपम अनुराग का प्रमाण है।

आप की सांगीतिक रचनाओं को मार्गी और देशी संगीत प्रकारों में बांटा जा सकता है। 'मार्गी संगीत' की रचनाओं के अंतर्गत आप की 'ध्रुपद' रचनाएं प्रमुख है। राग सोहिनी में ध्रुपद गायकी की चौताल में निबद्ध उनकी रचना उनके श्रेष्ठ कवि और संगीतकार होने का श्रेष्ठ प्रमाण हैः

ए गावे पिया प्यारी, ध्रुपद सप्त सूर तीन ग्राम, एकविस मूर्छना लेत बनाई ।।धृ।।

आरोही, अवरोही, अस्ताई, संचारी, धुरन, मुरन, बरन–बरन परन बजाई ।।१।।

गडगथों गडगथों धुमकटतक धुमकटतक, ताधिलांग ताधिलांग मिरदंग बाजत सोहाई ।।२।।

'प्रेमानंद' कहे प्यारी लेत तान तननननन, प्रशंसित स्याम लेट कंठ भुज लगाईं ।।३।।

इसी प्रकार राग कल्याण पर आधारित एक रचना में १५ तालों का प्रयोग किया गया है। उस रचना के प्रारम्भिक शब्द हैः

'परब्रह्मराय परब्रह्मराय, अखिल भुवनपति नाथ, नारायण अगम निगम नेति नेति कही गाय'

इसमें जिन तालों का उल्लेख है वह इस प्रकार हैः मुल्तानी, अवली, दीपचंदी, सुलफाक, चौताल, असवारी, जयमंगल, रूपक, रूद्र, अष्टताली, ब्रह्म, चोगब्रह्म, चर्चरी, म्हाड त्रिताल, चम्पक।

कुछ पदों में पखावज के विभिन्न बोलों को ध्रुपद की रचना में गुन्धकर अत्यंत आकर्षक सृजन किया है।

उनकी रचनाओं के विश्लेषण के बाद उन्हें निम्न रूप में विभाजित किया जा सकता हैः

गायन प्रकार

अ) मार्गी संगीतः ध्रुपद, धमार, रागमाला, तालमाला, चतुरन्ग, त्रिवट, ठुमरी

ब) देशी संगीतः चेष्टा, धोल, प्रभाती, कवित्त, गरबी, दुहा–छंद, रेखता, गज़ल, कव्वाली, आरती, गौड़ी, प्रार्थना, तिल्लाना, दादरा, होरी ई। उत्सव गीत।

राग

कल्याण, मारू, जंगला, अडाना, गौड़ी, झिंझोटी, श्रीटंक, परज, विभास, देव गंधार, प्रभाती, धनाश्री, सोहिनी, परज, मल्हार, काफी, आसावरी, परज, सारंग, सोरठ, सारंग, हमीर, सामेरी, मांड, बिहागडा, बिहाग, केदार, हुसैनी काफी, मालीगौरा, खमाज, खम्बाती इत्यादि

ताल एवं छंद

चौताल, धमार, सूल्फाकता, ब्रह्मताल, रुद्रताल, तीनताल, दादरा, झपताल, रूपक, पंजाबी, दीपचंदी, अष्टताली, चाचर एवं अन्य अनेक प्राकृत छंद।

भाषा

संस्कृत, हिंदी, बृज, राजस्थानी, तलपदी–सोरठी, उर्दू, कच्छी, मारवाड़ी इत्यादि।

कार्य

स्वामी प्रेमानंद द्वारा किया गया साहित्यिक रचनात्मक कार्य प्रमुखतः पांच ग्रंथों में संगृहीत है। वह इसप्रकार हैः

१. ध्यान मंजरी
२. नारायण चरित्र
३. तुलसी विवाह
४. गोपी विरह
५. श्रीहरिचरित्र।

आप ने चार हजार से अधिक भक्ति रचनाएं गुजराती, बृज, हिंदी इत्यादि भाषाओं में रची है। आप के द्वारा रचे गए ध्रुपद का साहित्य अपने आप में अनुपम है।

श्रीजी महाराज के अक्षरधामवासी होने पर जिसप्रकार से करुणायुक्त पदों की रचनाएं की, वह किसी कठोर ह्रदय के व्यक्ति को भी घायल कर दें ऐसी दिव्य है। अनेक रचनाओं के सृजन का सिलसिला आप की मृत्यु तक चलता रहा। अंत में २१ नवम्बर १८५४ में आप भी अक्षरधामवासी हो गए।

निष्कर्ष

सुशुप्त, ग्लानियुक्त समाज को जागृत करने के लिए संतो द्वारा समयांतर पर किये गये प्रयासों का इतिहास अनुपम है। स्वामीनारायण सम्प्रदाय के संतों का योगदान गुजरात में विशेष रहा है। स्वामी प्रेमानंद का कार्य अनन्यसाधारण है। भाषा, साहित्य के सन्दर्भ में विषय वैविध्य तथा संगीत के सन्दर्भ में स्वर, ताल, रचना, गायकी में वैविध्य उनकी अद्वितीय प्रतिभा का परिचायक है। निश्चय ही इसी कारण से उनके द्वारा निर्मित चार हज़ार से अधिक रचनाओं की व्याप्ति भी विशाल है। दुर्भाग्य से इन रचनाओं में निहित संगीत के प्रामाणिक स्वरुप की जानकारी बहुत कम लोगों को है अतः उसपर अधिक अध्ययन एवं संशोधन होने से स्वामीनारायण सम्प्रदाय की तथा स्वामी प्रेमानंद जी के कर्तुत्व का परिचय आनेवाली पीढ़ी के लिए अवश्य लाभकारी होगा। स्वामी प्रेमानंद निश्चित रूप से साहित्य एवं संगीत में असाधारण विद्वान् थे।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

विल्यम, रेमंड (२००१), इंट्रोडक्शन ऑफ़ स्वामीनारायण हिन्दुइज्म, केम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस।

बेहरामजी मेरवानजी मलबारी; कृष्णलाल झवेरी, मलबारी एम. बी. (१९९७), 'गुजरात एंड दी गुजरातिस', एशियन एज्युकेशनल सर्विसेस। पृ. सं. ७२, १०८

भगवत प्रियदास, साधू, 'सत्संग रीडर १–२, ४थी एडिशन', स्वामीनारायण अक्षरपीठ, अहमदाबाद, २००६, पृ–सं. ५४

के, अय्यप्पा पनिकर, 'मिडीवल इन्डियन लिटरेचरः सर्वेस एंड सिलेक्षन्स', साहित्य अकादेमी, देहली, २००६, पृ. ६

'दी वचनामृतः दी स्पिरिच्युअल डिस्कोर्सेस ऑफ़ स्वामीनारायण', स्वामीनारायण अक्षरपीठ, शाहीबाग, अहमदाबाद, २००३. पृ. सं. ८१.

दवे, रमेश, 'सहजानंद चरित्र', स्वामीनारायण अक्षरपीठ, अहमदाबाद, २००६. पृ. ७२

महंत, पुराणी स्वामी हरिस्वरूपदास, 'श्री प्रेमानंद काव्यम दृ भाग १,२' श्री स्वामीनारायण मंदिर, भुज–कच्छ, १९९५. पृ. सं. २७

माधवप्रियदास, स्वामी, 'श्री स्वामीनारायण चरित गाथा–भाग १', इमेज पब्लिकेशन्स, मुंबई. पृ. सं. १२६, २८५

साक्षात्कारः स्वामी चैतन्य स्वरुप एवं यशवंत महाले, दिनांक १२ सितम्बर, २०१४।